Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2026: 8.739,
https://www.srjis.com/issues_data/291
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL, APRIL-MAY 2026, VOL-14/75

वैश्वीकरण का परिदृश्य एवं लोकसंस्कृति

डा.मनीष कुमार मिश्र
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी, नरोत्तम सिंह पद्‌म सिंह राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय मगरहॉ, मीरजापुर, उ.प्र.
Email - profmanish.hindi@gmail.com

Paper Received On: 21 APRIL 2026
Peer Reviewed On: 25 MAY 2026
Published On: 01 JUNE 2026

Abstract

वैश्वीकरण आधुनिक विश्व की एक सशक्त गतिमान प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी और राजनीतिक स्तर पर विभिन्न देशों के बीच पारस्परिक जुड़ाव बढा है। इस प्रक्रिया नें जहाँ विश्व को "ग्लोबल विलेज" में बदल दिया है वहीं इसका गहरा प्रभाव लोक- संस्कृति पर भी पड़ा है। यह परिदृश्य एक ओर विकास, संचार और अवसरों का विस्तार करता है तो दूसरी ओर स्थानीय अस्मिताओं के लिए चुनौती भी उत्पन्न करता है। वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत विश्व के विभिन्न देशों के बीच आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और तकनीकी संबंध सुदृढ़ होते हैं। इसके माध्यम से विश्व एक दूसरे पर अधिक निर्भर होता जा रहा है और संपूर्ण पृथ्वी एक वैश्विक गाँव का आकार लेती जा रही है। सरल शब्दों में कहा जाए तो - "वैश्वीकरण राष्ट्रीय सीमाओं के परे वस्तुओं, सेवाओं, पूँजी, सूचना, संरचना, विचारों और संस्कृति का मुक्त प्रवाह है।"

***प्रमुख-शब्दावली* (Key Words)-** *वैश्वीकरण, लोकसंस्कृति, ग्लोबल विलेज, स्थानीय-अस्मिता, डिजिटल-तकनीक, बहुराष्ट्रीयता, उपभोक्तावाद, उदारीकरण, निजीकरण, राष्ट्रीय-सम्प्रभुता, ब्रांड-संस्कृति, बी.पी.ओ., एफ.डी.आई. स्टार्टअप, मिथक, नवाचार, उपभोक्तावाद सूचना प्रौद्योगिकी आदि।*

परिचय (Introduction)

21वीं सदी में वैश्वीकरण नें विश्व को एक साझा आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी मंच पर ला खड़ा किया है। संचार माध्यमों, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, डिजिटल तकनीक और बाजार आधारित अर्थव्यवस्था के विस्तार नें सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। इस प्रक्रिया में लोक- संस्कृति, जो किसी समाज की जड़ों, परंपराओं और सामूहिक चेतना की वाहक होती हैं, गहरे परिवर्तन के दौर से गुजर रही हैं। वैश्वीकरण का स्वरूप जटिल और बहुपरतीय है। इसके आयाम जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करते हैं। यह जहाँ बहुमुखी विकास और वैश्विक संवाद का अवसर देता है वहीं सांस्कृतिक अस्मिता, सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता के लिए गंभीर चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध- पत्र "वैश्वीकरण का परिदृश्य एवं लोक संस्कृति" विषय के विभिन्न आयामों पर आधारित है। जिसमें हमनें वैश्वीकरण एवं लोक संस्कृति के विभिन्न पहलुओं/आयामों को समकालीन

Copyright@2026 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

समय, समाज, एवं संस्कृति/लोक संस्कृति के संदर्भ में देखनें, समझनें का प्रयास किया है। साथ ही वैश्वीकरण के इस दौर में लोकसंस्कृति अपनीं मूल परम्परा, पहचान, एवं चेतना को सुरक्षित एवं संरक्षित रखनें,उसके प्रवाह को बनाए एवं बचाए रखनें में किस प्रकार से संघर्षरत है, इसकी भी पड़ताल करनें की कोशिश की गयी है।

वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ है- विश्वभर को एक इकाई के रूप में देखना। यह वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत विभिन्न देशों की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और तकनीकी गतिविधियाँ आपस में जुड़ती चली जाती हैं। इसके माध्यम से भौगोलिक सीमाएँ अपेक्षाकृत शिथिल होती हैं और विचार, वस्तु, पूँजी, सूचना तथा संस्कृति का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आदान-प्रदान होता है। वैश्वीकरण के वर्तमान परिदृश्य में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, सूचना प्रौद्योगिकी, इंटरनेट, सोशल- मीडिया, वैश्विक बाजार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान प्रमुख तत्व है। वैश्वीकरण का प्रभाव समाज में तीव्र परिवर्तन और अनिश्चितता हेतु उत्तरदायी है। इसमें जहाँ एक ओर सूचना प्रौद्योगिकी नें विशाल संसाधनों से नए विचार, प्रतिस्पर्धा और मनोरंजन के उपकरण प्रदान किए हैं वहीं दूसरी ओर अत्यधिक उत्पादन व सामग्रियों की उपलब्धता नें समाज में उपभोक्तावाद की स्थायी प्रथा को जन्म दिया है। इस प्रक्रिया में लोक- संस्कृति जो किसी समाज की जड़ों, परंपराओं और सामूहिक चेतना की वाहक होती हैं, गहरे परिवर्तन के दौर से गुजर रही हैं। वैश्वीकरण से सामाजिक बंधन और संबंध भी कमजोर हुए हैं जिससे छद्म संबंधों में वृद्धि हुई है। पाश्चात्य विचारों और मूल्यों के अनुकूलन से स्थानीय ज्ञान और प्रथाओं में विश्वास का ह्रास हुआ है। वहीं संस्कृति के वैश्वीकरण से तात्पर्य केवल स्थानीय संस्कृति को वैश्विक संस्कृति से जोड़ना मात्र नहीं है अपितु स्थानीय संस्कृति की स्थानीयता को मूल रूप में बनाए/बचाए रखना भी है। इसनें न केवल राष्ट्रीय बल्कि विश्व- स्तर पर विचारों के आदान-प्रदान के परिणामस्वरुप लोगों के जीवन- शैली और जीवन- स्तर दोनों में बड़े बदलाव किए हैं।

"द ह्यूमन डेवलपमेंट" रिपोर्ट नें माना है कि वैश्वीकरण नें दुनिया भर के लोगों के लिए रचनात्मकता के सभी द्वार खोल दिए हैं। विचार और ज्ञान दूर-दूर तक पहुँच गए हैं। गिडिग्सं (1990) नें इसे "दूर से होने वाली क्रिया", हार्वे (1989) नें "समय तथा स्थान के सिकुड़ने की क्रिया", ओहमें ने (1990) "आत्मनिर्भरता को तेज गति प्रदान करनें की क्रिया" तथा कैसेल्स (1996) नें "जागृति उत्पन्न करने की क्रिया" के रूप में इसे परिभाषित किया है। टर्नर (1990) के अनुसार-" वैश्वीकरण एक ऐसा सुघड़ शब्द है जिसका अर्थ है- विश्व समाज का निर्माण।" अतः कुल मिलाकर वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो वस्तुतः संचार व्यवस्था, यातायात और सूचना, तकनीक में हुई बहुत अधिक(अंधाधुंध)प्रगति का परिणाम है।

वैश्वीकरण का भारतीय संदर्भ-

वैश्वीकरण का भारतीय संदर्भ विशेष रूप से 1991 के बाद की आर्थिक नीतियों से जुड़ा हुआ है। आर्थिक संकट की पृष्ठभूमि में भारत ने उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (एल.पी.जी. मॉडल) को अपनाया। जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था, समाज और संस्कृति में व्यापक परिवर्तन आया। इसके परिणाम स्वरुप--1- विदेशी निवेश बढ़ा। 2- सेवा क्षेत्र का विकास हुआ। 3- शहरीकरण और मध्यम वर्ग का विस्तार हुआ। भारतीय संदर्भ में वैश्वीकरण एक

मिश्रित अनुभव रहा है। इसनें विकास, तकनीक और अवसर दिए परंतु सामाजिक विषमता और सांस्कृतिक क्षरण जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न की। अतः आवश्यक है कि भारत "आत्मनिर्भर भारत" की भावना के साथ वैश्वीकरण को अपनाते हुए अपनें सामाजिक- सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करें।

भारतीय लोक संस्कृति पर वैश्वीकरण का मिला-जुला प्रभाव रहा है। कहीं इसनें भारतीय समाज में प्रचलित स्त्रीवादी और जातिवादी जड़ता को तोड़ा है तो कहीं पारिवारिक संबंधों एवं मूल्यों को विघटित किया है। वहीं दूसरी ओर संस्कृति के लिए वैश्विक द्वार खोलनें का काम वैश्वीकरण नें ही किया है, जिसके परिणाम स्वरुप कई क्षेत्रीय संस्कृतियाँ विश्व स्तर पर अपनीं पहचान बना रही हैं।

वैश्वीकरण के वर्तमान परिदृश्य में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, सूचना- प्रौद्योगिकी, इंटरनेट, सोशल- मीडिया, वैश्विक बाजार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान प्रमुख तत्व है। इसके कारण-

1- भौगोलिक सीमाएँ सिमट गई हैं।

2- उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार हुआ है।

3- वैश्विक मीडिया और मनोरंजन उद्योग का प्रभाव बढ़ा है।

यह परिदृश्य जहाँ एक ओर विकास, संचार और अवसरों का विस्तार करता है तो वहीं दूसरी ओर स्थानीय अस्मिताओं के लिए चुनौती भी उत्पन्न करता है। प्रस्तुत पत्र में वैश्वीकरण के विभिन्न आयामों एवं उसकी संचालक शक्ति को देखनें,समझनें का प्रयास किया गया है। साथ ही भारतीय संस्कृति,समाज एवं जीवन-शैली पर पडनें वाले इसके सकारात्मक-नकारात्मक प्रभावों,परिणामों
को भी देखनें-समझनें की कोशिश की गयी है।

वैश्वीकरण के प्रमुख आयाम

1- आर्थिक आयाम

क- मुक्त व्यापार

ख- बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विस्तार।

ग- निजीकरण और उदारीकरण

ग- श्रम एवं पूँजी का वैश्विक प्रवाह।

2- सांस्कृतिक आयाम

क- जीवन- शैली, खान-पान, फैशन और मनोरंजन का वैश्विक प्रभाव।

ख- लोक संस्कृतियों पर प्रभाव

3- तकनीकी आयाम

क- इंटरनेट, सोशल- मीडिया, डिजिटल- क्रांति।

ख- सूचना का तीव्र प्रसार

Copyright@2026 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

4- राजनीतिक आयाम

क- अंतरराष्ट्रीय संगठन, संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व बैंक आदि।

ख- राष्ट्रीय संप्रभुता पर वैश्विक नीतियों का प्रभाव।

ग- वैश्विक शासन की अवधारणा

वैश्वीकरण के प्रभाव

1-- सकारात्मक प्रभाव

क- आर्थिक विकास एवं निवेश में वृद्धि

ख- ज्ञान और तकनीक का आदान-प्रदान

ग- रोजगार के नए अवसर

घ- सांस्कृतिक संवाद और समझ

2- नकारात्मक प्रभाव

क- आर्थिक असमानता में वृद्धि

ख- स्थानीय उद्योगों और संस्कृतियों का ह्रास

ग- उपभोक्तावाद का प्रसार

घ- राष्ट्रीय संप्रभुता पर प्रभाव

1- भारतीय समाज और संस्कृति पर प्रभाव-

क- जीवन शैली में परिवर्तन - उपभोक्तावाद, ब्रांड संस्कृति।

ख- लोक संस्कृति पर प्रभाव - परंपराएँ बाजार केंद्रित हुई।

ग- भाषाई प्रभाव - अंग्रेजी का वर्चस्व, लोक भाषाओं की उपेक्षा।

घ- परिवार व्यवस्था - संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर झुकाव।

2- शिक्षा और मीडिया में वैश्वीकरण

क- निजी विश्वविद्यालयों और अंतरराष्ट्रीय पाठ्यक्रमों का विस्तार।

ख- वैश्विक मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का प्रभाव।

ग- सूचना की सुलभता और ज्ञान का वैश्वीकरण।

3- भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

क-- सकारात्मक प्रभाव

1- आर्थिक विकास- जी.डी.पी. में वृद्धि, सेवा क्षेत्र (आई.टी., बी.पी.ओ.) का विस्तार।

2- विदेशी निवेश- एफ.डी.आई. और एफ. आई. आई. में बढ़ोत्तरी।

3- रोजगार के अवसर - निजी क्षेत्र और स्टार्टअप संस्कृति का विकास।

4- तकनीकी उन्नति - सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल क्रांति।

Copyright@2026 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

ख- नकारात्मक प्रभाव

1- आर्थिक असमानता - अमीर गरीब के बीच अंतर बढा।

2- कृषि क्षेत्र की उपेक्षा - किसान वर्ग पर दबाव।

3- स्थानीय उद्योगों पर संकट - कुटीर एवं लघु उद्योग प्रभावित।

4- बेरोजगारी और अस्थिर रोजगार - ठेका और असंगठित क्षेत्र का विस्तार।

4- भारत के लिए चुनौतियाँ

क- सांस्कृतिक अस्मिता का संरक्षण

ख- समावेशी विकास सुनिश्चित करना

ग- ग्रामीण और शहरी के बीच संतुलन

घ- आत्मनिर्भरता और वैश्विक सहभागिता का सामंजस्य।

लोक शब्द का सामान्य अर्थ है- सामान्य जन- समुदाय और संस्कृति का अर्थ है- जीवन- शैली, आचार- विचार, विश्वास, मिथक, कला और परंपराएँ। इस प्रकार लोक संस्कृति वह संस्कृति है जो सामान्य जनता के दैनिक जीवन, अनुभव और परंपराओं से विकसित होती है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से आगे बढ़ती है और किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति होती है। लोक संस्कृति में लोकगीत, लोककथाएँ, लोकनृत्य, लोकनाट्य, रीति- रिवाज, वेशभूषा, खान- पान, लोक- विश्वास आदि सम्मिलित होते हैं। समग्र रूप में लोक संस्कृति किसी समाज की सामूहिक चेतना और परंपरागत जीवन पद्धति की अभिव्यक्ति है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से विकसित होती है और जन सामान्य के जीवन, विश्वासों, अनुभवों तथा भावनाओं को व्यक्त करती है। लोक संस्कृति में शास्त्रीयता से अधिक सहजता और सामूहिकता होती है।

परिभाषा

1- डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार-

"लोक संस्कृति वह संस्कृति है, जो लोक जीवन की सहज अनुभूतियों से जन्म लेकर लोक मानस में निरंतर प्रवाहित होती रहती है।"

2- डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार-

" लोक संस्कृति वह जीवन पद्धति है जो सामान्य जनता के सहज जीवन से उत्पन्न होकर उसकी परंपरा में सुरक्षित रहती है।"

3- डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार -

" लोक संस्कृति जनता की वह सांस्कृतिक धरोहर है जिसमें उसकी आस्था, अनुभव और सामूहिक चेतना प्रतिबिंबित होती है।"

लोक संस्कृति के प्रमुख घटक--

1- लोक गीत- विवाह, जन्म, ऋतु, पर्व- त्योहार से जुडें गीत।

2- लोक नृत्य- गरबा, भांगड़ा, कथकली, छऊ आदि।

3- लोककथाएँ एवं लोक कथानक- वीरगाथाएँ, प्रेमकथाएँ, नैतिक कथाएँ आदि।

4- लोक नाटक- नौटंकी, यक्षगान, तमाशा आदि।

5- लोक विश्वास एवं रीति रिवाज- व्रत- त्यौहार, संस्कार, पूजा- पाठ, कर्मकांड।

6- लोक कला एवं हस्तशिल्प- मधुबनी, वारली, चित्रकला, बुनकरी, आदि।

7- लोक भाषा और बोलियाँ - अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मैथिली आदि।

लोक संस्कृति की विशेषताएँ

1- सामूहिक रचना और लोक मानस से जुड़ाव

2- मौखिक परंपरा पर आधारित

3- सरल, स्वाभाविक और सहज अभिव्यक्ति

4- प्रकृति, श्रम और जीवन से गहरा संबंध

5- परिवर्तनशील होते हुए भी परंपरागत

लोक संस्कृति का महत्व

1- सांस्कृतिक पहचान- समाज की अस्मिता को बनाए रखती है।

2- सामाजिक एकता- सामूहिक सहभागिता को प्रोत्साहन।

3- इतिहास और परंपरा का संरक्षण

4- नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का संवाहक

5- साहित्य और कला का आधार

इस प्रकार हम देखते हैं कि लोक संस्कृति समाज की जड़ों से जुड़ी हुई संस्कृति है। यह न केवल अतीत की स्मृति को सुरक्षित रखती है बल्कि वर्तमान जीवन को भी दिशा देती है। किसी भी समाज की पहचान और सांस्कृतिक निरंतरता में लोक संस्कृति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। किसी क्षेत्र का लोक जीवन वहाँ की संस्कृति का उद्गम स्थल होता है और लोक संस्कृति उस क्षेत्र विशेष की जन समुदाय की सामूहिक ऊर्जा का स्रोत होता है। लोक- संस्कृति, लोक- जीवन की जीवन- शैली होती है जो लोक- परंपराओं, लोक- साहित्य, लोकनाट्य, लोकगीत, लोक- कला में सहज आत्मीयता के साथ पल्लवित होती है। लोक- साहित्य, लोक- मानस की सहज एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति होती है जो परिभाषित भाषा- शास्त्रीय रचना पद्धति एवं व्याकरणिक नियमों से रहित होती है। यह क्षेत्र विशेष की पहचान को भी स्थापित करती है। भारतीय लोक संस्कृति अपनी विरासत और संसाधनों के मामले में काफी समृद्ध है।

वैश्वीकरण में व्यक्तिगत इच्छाओं की पूर्ति ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है, सत्य है। इस प्रवृत्ति ने अलगाववाद को बढ़ाया है। जिसके कारण लोक- संस्कृति की समन्वयवादिता समाप्त हो रही है और 'सेल्फ- लव' की जीवन शैली के कारण लोग अकेलेपन और अवसाद का शिकार हो रहे हैं। दूसरा परिदृश्य यह भी है कि

वैश्वीकरण में संस्कृतियों का प्रवाह एकतरफा नहीं है बल्कि इसमें संस्कृतियाँ क्षेत्रीय से वैश्विक और वैश्विक से क्षेत्रीय दोनों दिशाओं में प्रवाहित हो रही है। संस्कृति के लिए वैश्विक द्वार खोलने का काम वैश्वीकरण नें ही किया है जिसके परिणाम स्वरुप क्षेत्रीय संस्कृतियाँ विश्व स्तर पर अपनीं पहचान बना रही हैं।

वैश्वीकरण आधुनिक युग की एक सशक्त प्रक्रिया है जिसनें विश्व को आर्थिक, तकनीकी और सांस्कृतिक स्तर पर आपस में जोड़ दिया है। लोक संस्कृति किसी समाज की मूल पहचान और सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति होती है। अतः इन दोनों के बीच संबंध संघर्ष, समन्वय और सह- अस्तित्व का है।

संघर्ष- परंपरा बनाम आधुनिकता का।

समन्वय- लोक संस्कृति का नवाचार के साथ पुनर्रचना का।

सह अस्तित्व- वैश्विक मंच पर स्थानीय पहचान की उपस्थिति का।

हम कह सकते हैं कि वैश्वीकरण एक द्विआयामी प्रक्रिया है- यह विकास और अवसर लाती है साथ ही चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है। अतः आवश्यक है कि वैश्वीकरण को मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक न्याय के साथ संतुलित किया जाए। वैश्वीकरण के प्रभाव से लोक संस्कृति के समक्ष दोहरी स्थिति उत्पन्न हुई है- जहाँ एक ओर लोक परंपराओं का क्षरण, बाजारीकरण और मानकीकरण हो रहा है तो वहीं दूसरी ओर लोक संस्कृति का पुनरुत्थान, प्रसार और उसकी वैश्विक पहचान भी बन रही है। भारत में वैश्वीकरण ने लोक संस्कृति को चुनौती भी दी और अवसर भी। जहाँ एक तरफ योग, आयुर्वेद, भारतीय लोकनृत्य वैश्विक पहचान बनें वहीं दूसरी तरफ कुटीर उद्योग और लोक भाषाएँ संकटग्रस्त हुई।

लोक संस्कृति पर वैश्वीकरण के प्रभाव-

1- लोक संस्कृति का व्यवसायीकरण।

2- लोक भाषाओं और परंपराओं का ह्रास।

3- डिजिटल माध्यमों से संरक्षण की नई संभावनाएँ।

वैश्वीकरण और लोक संस्कृति की चुनौतियाँ-

1- परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन।

2- युवा पीढ़ी का लोक संस्कृति से दूरी बनाना।

3- बाजार के दबाव में सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण।

वैश्वीकरण और लोक संस्कृति का संबंध विरोधात्मक नहीं बल्कि संवादात्मक है। आवश्यकता इस बात की है कि वैश्वीकरण के साधनों का उपयोग कर लोक संस्कृति की मौलिकता, विविधता और मानवीय मूल्यों को सुरक्षित रखा जाए। "स्थानीयता के संरक्षण के साथ वैश्विक सहभागिता" ही इस संबंध का संतुलित मार्ग है। वैश्वीकरण नें दुनिया को एक दूसरे के निकट लाया है। इस प्रक्रिया नें जहाँ आर्थिक और तकनीकी विकास को गति दी, वहीं लोक संस्कृति जैसी परंपरागत सांस्कृतिक संरचनाओं के समक्ष नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की। इसलिए यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि वैश्वीकरण लोक संस्कृति के लिए अभिशाप है या वरदान। मेरा मानना है कि वैश्वीकरण लोक संस्कृति के लिए

न पूर्णत: अभिशाप है न ही पूर्णत: वरदान। जहाँ इसका अंधानुकरण अभिशाप हो सकता है, वहीं इसका विवेक पूर्ण उपयोग वरदान भी सिद्ध हो सकता है।

लोक संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव-

1- सकारात्मक प्रभाव

क- लोक संस्कृति का वैश्विक प्रसार- लोकनृत्य, लोकगीत और हस्तशिल्प को अंतरराष्ट्रीय मंच मिला।

ख- संरक्षण एवं अभिलेखन- डिजिटल माध्यमों से लोक संस्कृति का दस्तावेजीकरण संभव हुआ है।

ग- आर्थिक अवसर- हस्तशिल्प, लोक कथाओं और पर्यटन के माध्यम से आजीविका के नए साधन बनें हैं।

घ- विलुप्त होती परंपराओं को नई पीढ़ी तक पहुंचानें में मदद।

च- हस्तशिल्प, लोककला और सांस्कृतिक पर्यटन से रोजगार के अवसर, कारीगरों और कलाकारों की आय में वृद्धि की संभावना।

2- नकारात्मक प्रभाव-

क- सांस्कृतिक समरूपीकरण- वैश्विक उपभोक्ता संस्कृति के दबाव में स्थानीय विविधता कम हो रही है।

ख- लोक भाषाओं का ह्रास- अंग्रेजी और प्रमुख भाषाओं के वर्चस्व से लोकभाषाएँ उपेक्षित हो रही हैं।

ग- उपभोक्तावाद का प्रभाव- लोक परंपराओं का व्यवसायीकरण उनकी मौलिकता को प्रभावित करता है।

घ- एक सी जीवन- शैली और मनोरंजन का प्रसार।

च- लोक परंपराओं की आत्मा से अधिक बाजार मूल्य पर जोर।

लोक संस्कृति किसी समाज की आत्मा होती है- जिसमें उस समाज की परंपराएँ, प्रथाएँ, लोकगीत, लोकनृत्य, लोककथाएँ, रीति- रिवाज, वेशभूषा, खान-पान और लोक भाषाएँ सम्मिलित होती हैं। लोक संस्कृति किसी भी समाज की जीवंत आत्मा है। इसके संरक्षण और संवर्धन के बिना सांस्कृतिक निरंतरता संभव नहीं। आधुनिकता और परंपरा के संतुलन से ही लोक संस्कृति को सुरक्षित रखा जा सकता है। वैश्वीकरण नें विश्व को निकट लाया है पर साथ ही सांस्कृतिक एकरूपता का संकट भी उत्पन्न किया है। ऐसे समय में लोक संस्कृति किसी समाज की जड़ों, अस्मिता और मानवीय मूल्यों को जीवित रखनें का सशक्त माध्यम बनती है। आधुनिकता और बाजार के दबाव के बीच लोक संस्कृति की उपयोगिता और भी बढ़ जाती है।

लोक संस्कृति की प्रमुख उपयोगिता -

1- सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण- वैश्विक संस्कृति के दबाव में लोक संस्कृति स्थानीय पहचान, परंपरा और मूल्यों को सुरक्षित रखती है।

2- सांस्कृतिक विविधता का संवर्धन- लोक संस्कृतियाँ विश्व संस्कृति को बहुरंगी बनाती है और एकरूपता का प्रतिरोध करती है।

3- आर्थिक उपयोगिता- हस्तशिल्प, लोक- कला, लोकनृत्य, और सांस्कृतिक पर्यटन से रोजगार और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिलता है।

Copyright@2026 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

4- नवाचार और पुनर्रचना- लोक संस्कृति नए रूपों में प्रस्तुत होकर नई पीढ़ी से जुड़ सकी।

वैश्वीकरण: लोक संस्कृति के लिए वरदान-

1- वैश्विक मंच पर पहचान- लोकगीत, लोकनृत्य, लोक-कला और हस्तशिल्प को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली। उदाहरण- योग, भारतीय लोकनृत्य, आयुर्वेद, हस्तशिल्प।

2- संरक्षण और अभिलेखन- डिजिटल माध्यमों से लोक परंपराओं का रिकॉर्ड और संरक्षण संभव हुआ।

3- आर्थिक सशक्तिकरण- सांस्कृतिक पर्यटन, हस्तशिल्प, बाजार और कला उद्योग से रोजगार के अवसर बढ़े।

4- नवाचार और पुनर्रचना- लोक संस्कृति नए रूपों में प्रस्तुत होकर नई पीढ़ी से जुड़ सकी।

5- सामाजिक एकता और समुदायिकता- लोकपर्व, लोकगीत और सामूहिक अनुष्ठान सामाजिक सहभागिता और सामंजस्य को बढ़ाते हैं।

6- मानवीय और नैतिक मूल्यों का संवाहक- लोक-कथाएँ और लोक-विश्वास,श्रम,सह-अस्तित्व, प्रकृति, सम्मान और नैतिकता को बढ़ावा देते हैं।

7- पर्यावरणीय-चेतना- लोक संस्कृति प्रकृति के साथ संतुलन,ऋतु-चक्र और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग का संदेश देती है।

8-सांस्कृतिक संवाद का माध्यम- वैश्वीकरण में लोक-संस्कृति, अंतर सांस्कृतिक संवाद और 'सॉफ्ट पावर' के रूप में उपयोगी है।

9- डिजिटल संरक्षण और नवाचार- डिजिटल प्लेटफॉर्म लोक परंपराओं के अभिलेखन, प्रसार और नई पीढ़ी से जुड़ाव में सहायक है।

लोक संस्कृति और साहित्य

लोक संस्कृति और साहित्य का अटूट संबंध रहा है। लोक संस्कृति और साहित्य दोनों ही मानव अनुभव की अभिव्यक्तियाँ हैं, किंतु उनके स्वरूप, सृजन-प्रक्रिया और उद्देश्य में मूलभूत अंतर है। लोक संस्कृति समाज के सामूहिक जीवन से उपजती है जबकि साहित्य प्राय: किसी व्यक्ति विशेष की सृजनात्मक चेतना का परिणाम होता है। लोक संस्कृति और साहित्य विरोधी नहीं बल्कि पूरक है। लोक संस्कृति साहित्य की जड़ है और साहित्य लोक संस्कृति की परिष्कृत अभिव्यक्ति। दोनों के समन्वय से ही किसी समाज की सांस्कृतिक चेतना पूर्णरूप में विकसित होती है।

1- साहित्य नें लोक संस्कृति से विषय, भाषा और प्रतीक ग्रहण किए हैं।

2- लोक संस्कृति को साहित्य नें स्थायित्व और व्यापकता दी है।

3- आदिकाल, छायावाद, प्रगतिवाद नई कविता और समकालीन साहित्य में लोक तत्वों की स्पष्ट उपस्थिति मिलती है।

साहित्य और लोक संस्कृति दोनों के तुलनात्मक अध्ययन से दोनों के अंतर्संबंधों की रूपरेखा स्पष्ट की जा सकती है।

साहित्य

स्वरुप- व्यक्तिगत, लिखित और कलात्मक।

रचनाकार- विशिष्ट लेखक/ कवि

परंपरा- लिखित, प्रकाशित और संरक्षित।

विषय- जीवन- अनुभव, विचार- दर्शन, संवेदना आदि।

उद्देश्य- सौंदर्य- बोध, वैचारिक- अभिव्यक्ति, सामाजिक आलोचना आदि।

उदाहरण- कविता, कहानीं, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि।

लोक-संस्कृति

स्वरूप- सामूहिक, मौखिक और परंपरागत।

रचनाकार- लोक (जन सामान्य)

परंपरा- मौखिक, पीढ़ी- दर- पीढ़ी हस्तांतरण।

विषय- जीवन, श्रम, प्रकृति, विश्वास, उत्सव आदि।

उद्देश्य- सामूहिक आनंद, सामाजिक एकता, परंपरा का संरक्षण आदि।

उदाहरण- लोकगीत, लोक- कथाएँ, लोकनृत्य, लोकनाट्य, रीति- रिवाज आदि

तुलनात्मक तालिका

आधार	लोक संस्कृति	साहित्य
सृजन	सामूहिक	व्यक्तिगत
माध्यम	मौखिक	लिखित
भाषा	लोकभाषा/ बोली	मानक/ साहित्यिक भाषा
शिल्प	सरल, सहज,	परिष्कृत/ कलात्मक
परिवर्तन	स्वाभाविक, सतत	लेखक केंद्रित

वैश्वीकरण का वर्तमान दौर संस्कृतियों के टकराहट और संक्रमण का है। यह एक ओर क्षेत्रीय संस्कृतियों के समक्ष संकट पैदा कर रहा है दूसरी ओर यह प्रत्येक संस्कृति के लिए खुला अवसर उपलब्ध कराता है। इसके चलते लोगों और मानव- प्रवास के बीच सांस्कृतिक संबंधों का विस्तार हो रहा है। संस्कृति के वैश्वीकरण से तात्पर्य केवल स्थानीय संस्कृति को वैश्विक संस्कृति से जोड़ना मात्र नहीं है अपितु स्थानीय संस्कृति की स्थानीयता को मूल रूप में बनाए रखना भी है। जो सांस्कृतिक विशिष्टता समय, स्थान और लोगों के समूह तक सीमित थी वह इन सीमाओं को तोड़कर वैश्विकता की ओर बढ़ रही है। वैश्वीकरण दुनिया में बहुत व्यापक परिवर्तन की भूमिका है। इसनें जीवन के हर क्षेत्र में अपने पद चिन्ह छोड़े हैं। संस्कृति और कला की अपनीं जमीन होती है जिसमें वे पल्लवित होती है जबकि वैश्वीकरण उस जमीन को धीरे-धीरे खत्म कर रहा है। मातृभाषा लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति है और वैश्वीकरण ने

Copyright@2026 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

मातृभाषा की विविधता को सीमित किया है। वैश्वीकरण का वर्तमान दौर संस्कृतियों के टकराहट और संक्रमण का है। यह एक ओर क्षेत्रीय संस्कृतियों के समक्ष संकट पैदा कर रहा है दूसरी ओर यह प्रत्येक संस्कृति के लिए खुला अवसर उपलब्ध कराता है।

इस प्रकार वैश्वीकरण पूरे विश्व को रूपांतरित और परिवर्तित कर रहा है। लोक संस्कृति हमारे जीवन का अनिवार्य अंग रहा है क्योंकि इसमें मनुष्य से जुड़ी समस्त क्रियाएँ, ज्ञान, साहित्य, कला, समाज का अनुभव, उत्सव, प्रथाएँ, परंपराएँ, व्रत, त्यौहार आदि शामिल है। वैश्वीकरण निश्चित रूप से लोक संस्कृति के समक्ष जो चुनौतियाँ रख रहा है उसको समझना लोक संस्कृति के प्रतिउत्तर को समझनें का प्रयास होगा। दूसरी प्रमुख बात यह भी है कि क्या वैश्वीकरण की जो सशक्त संचालक शक्तियाँ हैं, साधन है, क्या वह लोक संस्कृति को कमजोर कर रही हैं अथवा उसे पुनः उभार रही है, उन्हें मंच दे रही है, मौका दे रही है? निश्चित रूप से लोक संस्कृति के प्रति एक आग्रह बढा है। लोक बोलियों में बहुत सारे गीत गाए जा रहे हैं, बहुत सारी कलाओं का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। तीसरी बात जो बहुत ही महत्वपूर्ण है कि वैश्वीकरण जिस तरह से बाजार से संचालित है तो क्या लोक संस्कृति भी लोक से हटकर बाजार से संचालित हो जाएगा? क्या उसमें भी बाजार का हस्तक्षेप इतना बढ़ जाएगा की लोक संस्कृति की पारंपरिक जानी पहचानी अस्मिता प्रभावित होगी? चौथा महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि लोक संस्कृति को बचाए रखने वाले लोग, संस्थाएँ, कलाकार और उसके प्रचार प्रसार से जुड़े उपकरण /अभिकरण जैसे- दूरदर्शन, आकाशवाणी उनकी भूमिका कितनीं प्रभावी होगी,यह भी देखना होगा।।?

वैश्वीकरण और लोक संस्कृति का संबंध विरोधात्मक नहीं बल्कि संवादात्मक है। आवश्यकता इस बात की है कि वैश्वीकरण के साधनों का उपयोग कर लोक संस्कृति की मौलिकता, विविधता और मानवीय मूल्यों को सुरक्षित रखा जाए। "स्थानीयता के संरक्षण के साथ वैश्विक सहभागिता" ही इस संबंध का संतुलित मार्ग है। वैश्वीकरण नें दुनिया को एक दूसरे के निकट लाया है। इस प्रक्रिया नें जहाँ आर्थिक और तकनीकी विकास को गति दी, वहीं लोक संस्कृति जैसी परंपरागत सांस्कृतिक संरचनाओं के समक्ष नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की।

निष्कर्ष रूप में कहा जाए तो वैश्वीकरण एक अपरिहार्य प्रक्रिया है, जिसे न तो पूर्णतः नकारा जा सकता है और न ही बिना विवेक अपनाया जा सकता है। लोक संस्कृति के संरक्षण के लिए आवश्यक है कि वैश्वीकरण के सकारात्मक पक्षों का उपयोग करते हुए स्थानीय संस्कृतियों की विशिष्टता और मौलिकता को बनाए रखा जाए। "वैश्विक सोच और स्थानीय पहचान" का संतुलन ही लोक संस्कृति को जीवंत और प्रासंगिक बनाए रख सकता है। वैश्वीकरण के दौर में लोक संस्कृति केवल अतीत की धरोहर नहीं है बल्कि समकालीन समाज की आवश्यक शक्ति है। यह पहचान, विविधता, अर्थव्यवस्था और मानवीय मूल्यों को संबल देती है। "वैश्विक मंच पर स्थानीय आत्मा" यह लोक संस्कृति की आज की सबसे बड़ी उपयोगिता है। वैश्वीकरण लोक संस्कृति के लिए अवसर और चुनौती दोनों है। यदि लोक संस्कृति की मौलिकता और सामुदायिक चेतना को केंद्र में रखा जाए तो वैश्वीकरण उसे नया जीवन दे सकता है। अतः कहा जा सकता है कि विवेक और संतुलन के साथ अपनाया गया वैश्वीकरण लोक संस्कृति के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है।

Copyright@2026 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

लोक संस्कृति का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि समाज और नीति- निर्माता वैश्वीकरण के साधनों का उपयोग संरक्षण, संवर्धन और सम्मान के लिए कैसे करते हैं?

संदर्भ ग्रंथ सूची

शुक्ल, डा. परशुराम (2011)- लोकसंस्कृति : अवधारणा और तत्व, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
कुकरेती, हेमंत (2021)- भारत की लोकसंस्कृति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
नारायण, बद्री (1994)- लोकसंस्कृति और इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
जेमेशन, फ्रेडरिक (1998)- द कल्चर ऑफ ग्लोबलाइजेशन, यूनिवर्सिटी प्रेस, ड्यूक।
अमरनाथ, (1999)- हिन्दी का भूमंडलीकरण, हिन्दी विभाग, कलकत्ता।
भार्गव, नरेश (2014)- वैश्वीकरण: समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
वर्मा, विजय (2016)- लोकावलोकन, राजस्थान ग्रंथागार, जोधपुर।
रस्तोगी, डा. शिखा (2024)- लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
गिडिंग्स, एंथोनीं (2000)- कल्चर, ग्लोबलाइजेशन एन्ड वर्ड सिस्टम, यूनिवर्सिटी प्रेस, मिनिसोटा।
टॉमलिंसन , जान (1999), ग्लोबलाइजेशन एन्ड कल्चर, यूनिवर्सिटी प्रेस, शिकागो।
उपाध्याय, कृष्णदेव (1957), लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद।
शर्मा, गोविंद प्रसाद (2023), हिन्दी वैश्विक आयाम, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली।
प्रकाश, रवि (2020), वैश्वीकरण एवं समाज, विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी।
वर्मा कल्पना (2015), भूमंडलीकरण और हिन्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
निर्गुण, बसंत (2012), लोकसंस्कृति, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
सिंह, राधेश्याम, एवं रावत, डा. पवन कुमार (2024), लोक- साहित्य एवं संस्कृति, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
कुमार, प्रो. विजय (2023), लोक साहित्य, विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी।

Copyright@2026 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language